RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

# श्याम बेनेगल की फिल्मों में स्त्री चरित्रों का बदलता स्वरूपः एक अवलोकन

**डॉ0 दीप चन्द्र**
असिस्टेंट प्रोफेसर
स्कूल ऑफ मीडिया स्टडीज, रॉची
ज्यपुर नेशलन यूनिवर्सिटी, जयपुर
**प्राची वर्मा**
शोध छात्रा
झारखण्ड रॉय यूनिवर्सिटी

## सारांश

*हिन्दी सिनेमा में स्त्री को घरेलू महिला के रूप में चित्रित किया जाता रहा है। संयुक्त परिवार में रहते हुए, उसे पुरूष प्रधान समाज में चारो तरफ से दबाव में रखा गया तथा उससे उम्मीद की गयी की वह एक अच्छी पत्नी, बहन, मॉ और अच्छी बेटी की तरह रहे। उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं पर ध्यान नहीं दिया गया। पति को परमेश्वर बता कर स्त्री को उसके चरणों में स्थान दिया गया। कुल मिलाकर स्त्री को भोग्या माना गया। उसे पुरूष के बराबर अधिकार नही दिया गया है।*

*भारत में जब समानांतर सिनेमा की शुरूआत हुई तो अनेक फिल्मकारों ने अपने स्त्री पात्रों को बराबर के अधिकार प्रदान किए वह पुरूषों की तरह काम करने लगी। जहॉ कहीं उसके साथ शोषण, अत्याचार, दमन या अन्याय होता दिखा वह उठ खड़ी हुयी और उसने पुरूष का विरोध किया। यहीं से स्त्री विमर्श और स्त्री स्वतंत्रता पर फिल्में बनने लगीं, जिसका नेतृत्व फिल्मकार 'श्याम बेनेगल' ने किया। उनकी अधिकॉश फिल्मों में स्त्री पात्र अपने मौलिक स्वरूप में सामने आते हैं।*

*श्याम बेनेगल की फिल्मों की स्त्री न देवी है न सती है और एकदम आधुनिका भी नही है, बल्कि वह मध्यम वर्ग की सामान्य स्त्री है। प्रस्तुत शोध पत्र में श्याम बेनेगल की फिल्मों में स्त्री चरित्रों के बदलते स्वरूप का अवलोकन प्रस्तुत किया गया है।*

**मुख्य शब्दः–** फिल्में, चरित्र चित्रण, बदलते स्वरूप, स्त्री विमर्श, नायिकाएं, सामाजिक विभेद और अभिनय

हमारे देश में स्त्री की स्थिति बहुत ही विरोधाभाषी रही है। एक ओर उसे परम्परा से शक्ति के रूप में दुर्गा और काली कहा जाता है। तो वहीं दूसरी ओर अबला की संज्ञा भी दी गयी है। दोनों ही अतिवादी धाराणाओं में स्त्री के स्वतंत्र विकास में बाधा डाली है। स्त्री को एक मानवीय के रूप में देखने की कोशिश बहुत कम ही हुई है।

पुरूषों के बराबर अधिकार तथा स्थान की मॉगों ने भी स्त्री को बहुत ही अधिक छला है। इसी वजह से स्त्री को मानवीय का स्थान नही मिल पाया है। हमारे देश में पुरूष प्रधान समाज ने स्त्री को जन्म से मृत्यु तक पुरूषों के अधिनस्थ रखा, कभी पिता, पति और

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

कभी बच्चों पर निर्भर होती स्त्री अपने स्वयं के वजूद की खोज में अभी भी अंधकार में हाथपैर मार रही है।

वह जिनकों हम विद्धान कहते हैं, उन्होने स्त्री के गर्भ से जन्म लेने के पश्चात लिखा है कि शूद्र, गॅवार, ढोल, पशु और नारी ये सब ताड़न के अधिकारी।।– तुलसीदास

महिलाओं के प्रति अनेक रूपों में बढ़ता सामाजिक अन्याय वर्तमान समय में भी सामान्ती युग की बर्बरता की याद दिला देता है। किसी भी सभ्य समाज की स्थिति उस समाज में स्त्रियों की दशा देखकर ज्ञात की जा सकती है। स्त्रियों की स्थिति ही वह सपना है जो समाज की दशा और दिशा साफ कर देता है। स्त्रियॉ ही संतति, रीति–रिवाज के निर्वाह में प्रमुख भूमिका अदा करती रही है। फिर भी प्राचीन समाज से लेकर आज के आधुनिक कहे जाने वाले समाज तक स्त्रियॉ समाज के दबे कुचले वर्ग का एक बड़ा भाग होकर रह गयी है।

प्राचीन काल से भारत में व्याप्त असंतुलन, छुआछूत आदि कुरीतियों को समाप्त करने में भगवान बुद्ध, स्वामी महावीर, सन्त कबीर, रवीन्द्र नाथ टैगोर, राजाराम मोहन राय, ज्योतिबा फुले, डॉ अम्बेडकर तथा आचार्य रजनीश(ओशो) इत्यादि के प्रयास समाहित हैं।

आज के आधुनिक कहे जाने वाले समाज में स्त्रियों को बाजार की वस्तु बना दिया गया है। समकालीन समाज में बाल विवाह, सती प्रथा, वेश्यावृत्ति, दहेज के लिए महिलाओं को जला कर मार देना और न जाने कितने अपराध सरकारी प्रयासों के बावजूद इस समाज की जड़ों में गहरे तक जम चुके हैं। आज के इस भूमण्डलीकृत समाज में स्त्रियों का अवैध व्यापार बेरोकटोक चल रहा है। भारतीय समाज के इसी यथार्थ से उन कहानियों का जन्म होता है, जो विभिन्न विधाओ के माध्यम से सिनेमा के पर्दे पर आकार ग्रहण करती है।

आज भारतीय फिल्मों के परिदृश्य को गौर से देखें तो उसका विकास धीरे–धीरे एक प्रक्रिया के अन्तर्गत हुआ है। इस विकास यात्रा को आगे बढ़ानें का कार्य हमारे पूर्व के कुछ फिल्मकारों ने बड़ी दृढ़तापूर्वक किया है। इस फिल्म सृजन का कार्य भारतीय सिनेमा के पितामह दादा साहेब फाल्के ने शुरू किया है।

सामान्तर सिनेमा मे कई ऐसे नाम हैं जिन्होनें आज विश्व में भारतीय सिनेमा का परचम लहराया है। जिसमें एक नाम 'श्याम बेनेगल' का है, जिन्होनें भारतीय समाज से प्रेरणा लेकर आम जनजीवन की समस्याओं को सिल्वर स्क्रीन पर उकेरा और उन्होने भारतीय नारी की वास्तविक समस्याओं एवं उसकी मनोदशा को बहुत ही गहनता से समझ कर अपनी फिल्मों में दिखाया है।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

श्याम बेनेगल ने भारतीय समाज की सामन्ती प्रथा जैसी ज्वलंत समस्या को अपनी पहली फिल्म 'अंकुर 1973' के द्वारा उजागर किया। फिल्म अंकुर सामान्तवादी प्रथा का एक उदाहरण है जहॉ समाज में गरीबों के लिए जिन्दगी के मायने क्या है अमीरी और गरीबी के बीच सामाजिक असमानता किस तरह व्यापत है, किस प्रकार एक जमींदार का बेटा सूर्या एक गरीब महिला लक्ष्मी की भावनाओं के साथ खेलता है और उसके प्यार का अपमान करता है। लक्ष्मी गॉव की एक साधारण महिला होती है जो आपनी भावनाओं को काबू में रखती है। पति के गूँगा बहरा होने के बावजूद वह परिवार को सही से सम्हालती है। पर सूर्या उसको बहला फुसला कर उसके साथ सम्बन्ध बनाता है।

फिल्म मण्डी में पूरे गॉव के लोग जमीदार और पैसे वाले कोठे पर जाना तो चाहते हैं मनोरंजन भी करना चाहते हैं लेकिन दिन के उजाले में नही वो लोग चाहते हैं कि कोठा गॉव के बाहर चला जाए। पुरूष की यह ज्यादती और महिला की मजबूरी है।

फिल्म 'मम्मों' मे मम्मों पाकिस्तान वापस नही जाना चाहती अपने रिश्तेदारों को छोड़कर पुलिस वाले उसके रिश्तेदारों के पास आते हैं उसका वीजा खत्म हो गया तो जबरदस्ती उसको ट्रेन में बिठा देते हैं। लेकिन वह अगले स्टेशन में उतर जाती है और चुपचाप अपने गॉव वापस लैट जाती है। वकील से सलाह करती है तो वकील कहता है कि तुम अपने मरने का ऐलान कर दो मम्मो ने अपनी भावनाओं और जज्बातों को रिश्तों को इस प्रकार से भुना लिया झूठ बोली कानून का सहारा लिया और एक पतली गली निकाल ली जिससे कि वह अपने रिश्तेदारों के साथ रह सके। कानून बड़ा कठोर है वह कुछ देखता नही है अन्धा है क्योंकि मम्मो देश के लिए समाज के लिए कोई आतंकवादी नही थी। वह एक उम्रदराज भावनात्मक महिला थी।

जुबैदा फिल्म में महिला पात्र जुबैदा जो कि एक आधुनिक सोच से ओत–प्रोत है वह भी जीवन भर अपनी स्वतंत्रता को प्राप्त करनें के लिए संघर्ष करती रहती है। चाहे वो उसके पिता का घर रहा हो जहॉ पर उसे अपने पिता के बनाए रास्ते पर जबरदस्ती चलना पड़ता है। पिता उसके सभी सपनों पर रोक लगा देता है, उसकी मर्जी के बिना शादी करा देता है। यहॉ वह लड़ना तो चाहती है लेकिन लड़ नही पाती है, शादी के बाद पति भी इसे छोड़ देता है। दुबारा जब प्रिंस से शादी करती है तो वह एक बार फिर से सामाजिक बंधनों में जकड़ जाती है। जीवन भर वह पुरूष प्रधान सामाजिक वर्जनाओं से जकड़ी रहती है और उसको यह आजादी मरने के बाद ही मिलती है।

## निष्कर्षत

मण्डी, कोन्दुरा, भूमिका, सरदारी बेगम, हरी–भरी इत्यादि फिल्मों में श्याम बेनेगल द्वारा रचे गये महिला पात्रों के द्वारा भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक व अन्य पहलुओं की असमानता को बखूबी रचनात्कता और गम्भीरता के साथ सेलूलाइड पर

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

उकेरा है। हिन्दी सिनेमा की शुरूआत सन् 1913 से हुयी लेकिन हिन्दी सिनेमा में स्त्री को घरेलू महिला के रूप में चित्रित किया जाता रहा है। संयुक्त परिवार में रहते हुए उसे पुरूष प्रधान समाज में उसे चारो तरफ से दबाव में रखा गया तथा उससे उम्मीद की गयी कि वह अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाए लेकिन उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं पर ध्यान नही दिया गया पति को उसका ईश्वर बता कर स्त्री को उसके चरणों में स्थान दिया गया। कुल मिला कर भारतीय महिला को भोग्या ही माना गया है। उसे पुरूष के बराबर कभी भी अधिकार नही दिये गये हैं।

भारत में जब समानांतर सिनेमा की शुरूआत हुयी तो अनेक फिल्मकारों ने अपने स्त्री पात्रों को बराबर के अधिकार प्रदान किए वह पुरूषों की तरह काम करने लगी। जहॉ कहीं उसके साथ शोषण, अत्याचार, दमन या अन्याय होता दिखा वह उठ खड़ी हुयी और उसने पुरूष का विरोध किया। यहीं से स्त्री विमर्श और स्त्री स्वतंत्रता पर फिल्में बनने लगीं, जिसका नेतृत्व फिल्मकार 'श्याम बेनेगल' ने किया।

उपरोक्त शोध पत्र से यह स्पष्ट होता है कि श्याम बेनेगल की अधिकॉश फिल्मों में स्त्री पात्र अपने मौलिक स्वरूप में सामने आते हैं। श्याम बेनेगल की फिल्मों की स्त्री न देवी है न सती है और एकदम आधुनिका भी नही है। बल्कि वह मध्यम वर्ग की सामान्य स्त्री है। आधुनिक समाज में प्रजातंत्र होने के बावजूद भी स्त्री को आज भी स्वतंत्रता व समानता प्राप्त नही है। इसके प्रति चेतना जगाने का काम 'श्याम बेनेगल' ने किया है 'श्याम बेनेगल' का सिनेमा आधुनिक समाज का सिनेमा है जो कि हमेशा ज्वलंत समस्याओं को छूता आ रहा है।

## संदर्भ सूची

1. संगीता दत्ता– श्याम बेनेगल
2. जवरीमल्ल पारख– हिन्दी सिनेमा का समाज शास्त्र
3. आउटलुक मासिक पत्रिका– दिसम्बर, 2011
4. लमही पत्रिका, जुलाई– दिसम्बर, 2010
5. हंस मासिक पत्रिका, फरवरी 2013

## फिल्मोग्राफी

6. अंकुर–1973
7. निशॉत–1975
8. मंडी–1983
9. मम्मो–1994
10. सरदारी बेगम–1996
11. हरी–भरी–1999
12. जुबैदा–2000